● पञ्चमः पाठः

सुभाषितानि

(सुन्दर उक्तियाँ)

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।१।।

मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः,
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणाम्,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।।२।।

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति या लोकं तं लोको नु प्रसीदति।।३।।

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।४।।

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुल्लङ्घ्य सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद् बहु।।५।।

सत्याधारस्तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमा शिखा।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो यत्नेन वार्यताम्।।६।।

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधु समागमम्।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मरनित्यमनित्यताम्।।७।।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।८।।

अभ्यास प्रश्न

● लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

१. लोकः कं प्रसीदति?

२. क्रोधं केन जयेत्?

३. अनृतं केन जयेत्?

४. असाधुं केन जयेत्?

५. अंधकारे प्रवेष्टव्ये यत्नेन कः वार्यताम्?

६. कीदृशो मार्गः सर्वोत्तमः भवति?

७. कस्यः बुद्धिः विकसिता भवति?

८. कीदृशाः जनाः लोके दुर्लभाः?

९. कः तमो हन्ति?

१०. लोके कियन्तः सन्तः सन्ति?

● अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(अ) वरमेको गुणी ..... तारागणैरपि।

(ब) मनीषिणः सन्ति .....दुर्लभम्।

(स) चक्षुषा मनसा ..... प्रसीदति।

(द) अक्रोधेन ..... चानृतम्।

(य) मनसि वचसि ..... कियन्तः।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) सूर्य पूर्व से निकलता है।

(ब) जो विद्वान् होते हैं, वे हितैषी नहीं होते हैं।

(स) जो मुझे प्रसन्न रखता है, मैं उसे प्रसन्न रखता हूँ।

(द) असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।

(य) एक चन्द्रमा ही अंधकार को नष्ट कर देता है।

(र) कन्जूसी को दान से जीतना चाहिए।

(ल) सौ मूर्खों की अपेक्षा एक गुणवान् पुत्र श्रेष्ठ है।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित धातु-रूपों में लकार, वचन तथा पुरुष लिखिए–**
सन्ति, जयेत्, कुरु, त्यज, भवति।

२. **निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**
मनसा, कर्मणा, अक्रोधेन, दानेन, साधुना।

३. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**
साधु, असत्यम्, दुर्लभम्, चन्द्रः, कदर्यम्।

४. **अकृत्वा** एवं **गत्वा** में प्रत्यय बताइए।

● आन्तरिक मूल्यांकन

१. पाठ को पढ़ने के बाद आपको क्या शिक्षा मिलती है? अभिव्यक्त कीजिए।

२. जो श्लोक आपके मन को छू गये हैं, उन्हें कण्ठस्थ करें।

शब्दार्थ

मनीषिणः = विद्वान्। **हितैषिणः** = हित चाहनेवाला। **नृणाम्** = मनुष्यों में। **यथौषधम्** = जैसे ओषधि। **चक्षुषा** = नेत्र से। **वाचा** = वाणी से। **चतुर्विधम्** = चार प्रकार से। **तं** = उसके प्रति। **प्रसादयति** = प्रसन्न करता है। **अक्रोधेन** = क्रोध न करने से। **असाधुम्** = दुर्जन को। **जयेत्** = जीतना चाहिए। **कदर्यम्** = कंजूस को। **अकृत्वा** = न करके। **अनुल्लङ्घ्य** = बिना उल्लंघन किये। **परसन्तापम्** = दूसरे को दुःखी करना। **अगत्वा** = न जाकर। **तद्** = वह। **सत्याधारः** = सत्य ही आधार है। **दयावर्तिः** = दयारूपी बत्ती। **तपस्तैलम्** = तप ही तेल है। **शिखा** = लौ। **वार्यताम्** = जलाना चाहिए। **काये** = शरीर में। **पुण्यपीयूषपूर्णा** = पुण्यरूपी अमृत से भरे हुए। **प्रीणयन्तः** = प्रसन्न करते हैं। **परगुण** = दूसरों के गुण। **परमाणून** = परमाणुओं को। **पर्वतीकृत्य** = पर्वत (जैसा) बनाकर। **निजहृदि** = अपने हृदय में। **सन्तः** = सज्जन लोग। **कियन्तः** = कितने हैं।

●